

हॉलैंड में हिंदी

श्री नारायण शर्मा मथुरा

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनम् आपनोती, धनाद् धर्मः ततः सुखम्॥

अर्थात् विद्या विनय देती है, विनय से योग्यता मिलती है।

योग्यता से धन, धन से धर्म और उससे सुख मिलता है॥

आए हुए इस सम्मेलन में विद्वतजन,

मान्या मातृ शक्ति एवं अन्य महानुभाव। सभी को मेरा राम-राम, नमस्कार

मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ कि आज मुझे "हॉलैंड में हिंदी"के विषय पर बोलने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

हमारे पूर्वजों ने 26 फ़रवरी 1873 को कलकत्ता से लालारूख जहाज़ द्वारा सूरीनाम की ओर प्रस्थान किया और 5 जून 1873 को अपना पहला कदम सूरीनाम की धरती पर रखा। यह दिवस हमारे लिए हर वर्ष एक प्रेरणा लेकर आता है, क्योंकि उस मुश्किल समय में भी उन लोगों ने अपनी मान-मर्यादा, वेश-भूषा, रहन-सहन, सांस्कृतिक धरोहर व धार्मिकता के चिह्नों को नहीं मिटने दिया। उनके जीवन में अनेकों उतार-चढ़ाव आए, पर वे कभी विचलित नहीं हुए। वह समय उनके लिए परीक्षा की घड़ी आई थी, जिसमें उन्हें पास होना था। अपने कष्ट, दर्द तथा आसुओं को हँसते-हँसते झेलने या उन्हें भूलने के लिए मेले या गोष्ठियाँ आयोजित होती थी। सायंकाल थकने के बाद वे सब भोजपुरी और हिंदी में मनोरंजन के गीत गाते थे तथा अपने भावनाओं को प्रकट करते थे। खुशी की बात यह है कि उन्होंने अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखा तथा धर्म और संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। बाद में अनेक विद्वानों ने जनता को हिंदी के प्रति उत्साहित किया।

जब 1975 में सूरीनाम स्वतंत्र हुआ, तब बहुत से लोग हॉलैंड में आकर बस गए। हॉलैंड में प्रारंभ में भी हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पश्चिम की हवा ने बहुत रफ़तार से हमारे समाज पर आक्रमण किया। यूरोप तो गोरों का देश है, वहाँ का रहन-सहन तथा धर्म और संस्कृति हमसे बहुत अलग है। पश्चिमी संस्कृति और सभ्यता ने बच्चों को अपनी ओर काफ़ी प्रभावित किया और अभी भी कर रहे हैं।

अब हम कुँएँ में रहकर, मगर-मच्छ से कैसे बचें?

कैसे हम अपनी अस्मिता को सुरक्षित रखें?

कैसे हम अपने धर्म और संस्कृति को बचाएँ?

कैसे हम आने वाली पीढ़ी में अपनी पहचान की भावना भर सकें?

जब धर्म गया तो संस्कृति भी गई।

मनुष्य की पहचान, उसकी संस्कृति और सभ्यता पर आधारित है। तो अगत हम अपने बच्चों में संस्कृति व धार्मिकता के चिह्न भरना चाहते हैं, तो उसमें भाषा यानि मातृभाषा के प्रति लगाव पैदा करना होगा। यही कारन है कि लोग हॉलैंड में व्यक्तिगत ढंग से हिंदी पढ़ाने लगे।

परिणामस्वरूप 19 सितंबर 1983 में हिंदी परिषद नीदरलैंड की स्थापना हुई जिसका लक्ष्य रहा हॉलैंड में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना, जिससे हम धार्मिक, सांस्कृतिक, हिंदी साहित्य, कला आदि क्षेत्रों पर विशेष रूप से उन्नति कर सके।

आज हॉलैंड में हिंदी जो फल-फूल रहा है, उसमें विशेष हाथ हिंदी प्रेमी अध्यापकों का भी रहा है। हम उन सभी के सहयोग को अपने मानस-पटल पर सदैव अंकित रखेंगे। हिंदी परिषद नीदरलैंड के अंतर्गत आज अनेक संस्था, समाज, मंदिर, स्कूल एवं कॉलेज परीक्षा देते हैं। इससे बच्चे, युवा एवं प्रौढ़ लोगों के बीच हिंदी के माध्यम से धर्म, संस्कृति, आचारसंहिता सभ्यता को काफ़ी बढ़ावा मिला है। यह संस्था वर्धा से पाठ्यपुस्तक मंगवा कर हिंदी परीक्षा दिलाने लगी।

अब हिंदी परिषद नीदरलैंड इतनी विकसित हो गई कि यहाँ करीब 45 स्वैच्छिक संस्थाओं में हिंदी की पढाई हो रही है। सरनामी हिंदी जाननेवालों के मानक हिंदी समझने में कोई बाधा नहीं होती है क्योंकि दोनों ही भाषाओं की सांस्कृतिक संपन्नता एक समान है। सूरीनामी लोग अपने बच्चों को हिंदुस्तानी और डच भाषा के संस्कार देते हैं। डच यदि कामकाज की भाषा है तो हिंदुस्तानी बना सूरीनामी भारतवंशियों के जीवन और संस्कृति की भाषा। हम अपने दैनिक जीवन में **सरनामी** का प्रयोग करते हैं, फिर भी हिंदी को अपनी मातृभाषा मानते हैं। इसका कारण यह है कि सभी हिंदुस्तानी जो अपने आपको भारतवंशी मानते हैं अपने धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों में हिंदी को ही प्रयोग करते हैं।

हॉलैंड एक बहुसांस्कृतिक देश है, जिस में सभी प्रकार के लोग रहते हैं। यहाँ पर सभी को अपनी संस्कृति-सभ्यता व भाषा का प्रचार करने की सुविधा है। प्रसन्नता की बात यह है कि स्थानीय आकाशवाणी द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार भी होता है। दूरदर्शन के माध्यम से हर सप्ताह भी कार्यक्रम डच-हिंदी में भी चलता है।

हिंदी परिषद नीदरलैंड ने भी सांस्कृतिक धरोहर एवं अपनी अस्मिता को अक्षुण्ण रखने के लिए 1983 से आज तक अनथक प्रयास कर रहे हैं। वर्धा से हम पुस्तकें मँगाते हैं पर अब पाठ्यपुस्तक यहाँ पर ही तैयार कर रहे हैं। वर्ष में दो बार यहाँ पर खुद परीक्षा प्राथमिक, प्रारंभिक तथा प्रवेश स्तर पर तैयार करते हैं। अति प्रसन्नता की बात यह है कि आजतक हम 12, 000 प्रमाण पत्र वितरण कर चुके हैं। ऊच्च स्तर की परीक्षा जैसे परिचय, कोविद, रत्न परीक्षा वर्धा से ही मँगवाते हैं।

प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस पर राजनेताओं को भी हिंदी के संबंध में अपना मंतव्य देने के लिए बुलाया गया। भारतीय दूतावास भी हिंदी परिषद को पना योगदान देता रहा, जिसके लिए हम उनको आभार व्यक्त करते हैं। लक्ष्य यह रहा कि हम डच संस्कृति में रहते हुए भी उसको अपनाते हुए, सहज भाव में अपने धर्म, संस्कृति एवं अस्मिता को सुरक्षित रखें।

नीदरलैंड को हॉलैंड भी कहा जाता है। इसकी राजधानी आतस्तरदाम है। यहाँ पर राजाओं का राज है पर यह देश स्वतंत्र है। यहाँ पर 160 नसलीय लोग रहते हैं। इसकी सरकार देन हाग में है और देन हाग से ही हिंदी परिषद का कार्य निर्माण होता है। देन हाग में 2,500 भारतीय और

50,000 भारतवंशी रहते हैं। इसलिए इसको छोटा भारत भी कहा जाता है। हमारी संस्था का नाम हिंदी परिषद नीदरलैंड है। इसको हम (एच.पी.एन.) के नाम से पुकारते हैं।

निर्माण – इस संस्था को 1983 में स्थापित किया गया था। इस संस्था का कार्यभार संभालने का कार्य श्री नारायण मथुरा जी करते हैं। वह एक अध्यापक है और समाज सेवक भी है। उन्होंने काफ़ी परिश्रम करके अपने सहयोगियों के साथ इस संस्था को आगे बढ़ाया। देन हाग में 5 स्वैच्छिक संस्थाओं में हिंदी की पढाई होती रही है। देन हाग में 2 हिंदू स्कूल भी हैं। यहाँ पर हिंदी को प्राथमिकता भी दी गई है। इन विद्यालयों में 850 बच्चे पढ़ रहे हैं और इन विद्यालयों में अन्य भाषाओं की तरह ही मान्यता दी गई है। इन हिंदू स्कूलों में हिंदी परिषद की तरफ़ से अध्यापकों का चयन किया है।

प्रमुख पदाधिकारी – हिंदी परिषद नीदरलैंड के पदाधिकारी श्री नारायण मथुरा जी हैं। अन्य प्रमुख पदाधिकारियों में से रोसीता रामचरण, श्याम बीर्जमोहन, दिहल, मुनीष शर्मा और ज्योति बाला जी हैं। ये सब इस संस्था का कार्यभार संभाल रहे हैं। और आगे अन्य अध्यापकों का चयन करते हैं। इन के द्वारा चयन किए गए प्रमुख अध्यापक 26 हैं जिनके सहयोग द्वारा हिंदी परिषद को विकसित किया जा रहा है।

न केवल भारतीय और भारतवंशी यहाँ पर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं पर अन्य जातियों के लोग भी हिंदी पढ़ने के लिए उत्सुक हैं। हिंदी परिषद के अधिकारी पूरी मेहनत और लगन से इसके विकास हेतु प्रयास में लगे हैं और उन्हें काफ़ी हद तक सफलता प्राप्त भी हुई है। हिंदी परिषद नीदरलैंड में अधिकांश लोगों का चयन योग्यता के आधार पर किया जाता है। अपनी गतिविधियों द्वारा ही हिंदी का प्रयास किया है।

हिंदी परिषद ने 2008 में अपनी 25 वीं वर्षगांठ मनाई। 1983 से आज तक हर वर्ष हिंदी दिवस मना रहे हैं। विद्यालयों में परीक्षा हेतु परीक्षा समिति का संगठन किया गया है। प्रबंध, निदेशक, अध्यक्ष द्वारा परीक्षा समिति का चयन किया जाता है। यहाँ पर परीक्षा छः स्तर पर होता है। तीन स्तर की परीक्षा हिंदी परिषद द्वारा ही ली जाती है और तीन स्तर की परीक्षा की परीक्षा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा ली जाती है। हिंदी परिषद द्वारा ली जाने वाली परीक्षा हैं : (1) प्राथमिक परीक्षा, (2) प्रारंभिक परीक्षा और (3) प्रवेश परीक्षा, जिसमें प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्तर की परीक्षा ली जाती है। भारतीय राजदूतावास भी इस अभियान में हमारा सहयोग कर रहा है। इस परीक्षा के तीनों स्तरों में विद्यार्थी उत्तीर्ण होते हैं तो उनकी योग्यता के आधार पर उन्हें प्रमाण पत्र देकर आगे के स्तर में भेज दिया जाता है।

आगे भेजे गए विद्यार्थियों की परीक्षा भारत द्वारा ली जाती है। हमारे विद्यालयों के कुछ योग्य छात्र भारत में शिक्षा प्राप्त करने हेतु भी जाते हैं जिनकी परीक्षा वर्धा द्वारा ली जाती है। भारत द्वारा ली जाने वाली तीन स्तर की परीक्षा है। जो विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं उनके आगे की परीक्षा के लिए भारत (वर्धा) हमें सहयोग देता है। इसके प्रश्न पत्र भारत के द्वारा भेजे जाते हैं। परीक्षा की उत्तर पुस्तकों को संशोधन के लिए वर्धा भेजा जाता है और प्रमाण पत्र भी वर्धा से ही आते हैं। वर्धा की परीक्षा तीन स्तर की है : (1) परिचय, (2) कोविद और (3) रत्न।

हिंदी परिषद का प्रधान परीक्षा केंद्र देन हाग में है। इसके अलावा नीदरलैंड के चार दिशाओं पूरव, पश्चिम, उअत्र उअर दक्षिण में हिंदी केंद्र बनाए गए हैं। इन केंद्रों के मुख्य अधिकारी हैं : श्रीमान तेतेर जी, श्री महाबीर जी, श्री अवतार जी और कृष्णदत्त जी। अन्य अधिकारी भी हैं जो कि कार्यालयों को बड़े अच्छे तरीके से चला रहे हैं और हिंदी के विकास में अपना सहयोग दे रहे हैं।

देन हाग में 9 मंदिर हैं। यहाँ पर हम हिंदी का प्रचार भी करते हैं। इन मंदिरों में पूजा-पाठ, प्रवचन के अलावा रामायण और गीता का पाठ भी किया जाता है तथा सभी मुख्य त्योहारों जैसे नवरात्री, दीपावली, होली आदि मनाते हैं। पूरे देश में 25 से अधिक हिंदू मंदिर हैं जिनके द्वारा हिंदी का प्रचार किया जाता है।

हिंदी दिवस पर हिंदी का कार्यक्रम खूब लगन से होता है जिसमें सभी मुख्य और अन्य अधिकारी अपनी प्रतिभा दिखाते हैं और लोगों का हिंदी सीखने हेतु उत्साहित करते हैं।

आकाशवाणी (लोकल) रेडियो जिसका नाम अमोर और फ्राहोन है अति लोकप्रिय है। नारदलैंड के प्रमुख शहरों में स्थानीय आकाशवाणी भी हैं। यह हिंदी में है।

ओ३म (टी.वी.) दूरदर्शन प्रसारित होता है जिसके द्वारा हम अपने विचार और अनुभव लोगों तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं।

देन हाग में स्थानीय हिंदी संस्थाएँ हैं जिनके द्वारा हम हिंदी का प्रचार करते हैं। हम हिंदी की सफलता हेतु तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इन समागमों में भारतीय राजदूतावास का सहयोग और विश्वास हमें मिलता रहा है। वह हमारे हिंदी के विस्तार के अभियान में हमेशा सहयोग करते हैं। आज उन्हीं के सहयोग से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की राह पर चल रहे हैं और हमें आशा है कि हम इस लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

हम अपने दैनिक जीवन में सरनामी भाषा का प्रयोग करते हैं पर शिक्षा के लिए हिंदी को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि धर्म, संस्कृति और संस्कारों की भाषा आज हॉलैंड में हिंदी ही है। और यही कारण है कि हम हिंदी को महत्व देते हैं।

सरनामी एक बोल-चाल की भाषा है। इसकी लिखने की लिपी रोमन है। सभी धार्मिक और सांस्कृतिक ग्रंथ केवल देवनाग्री या संस्कृत में उपलब्ध है। हमने शिक्षकों की सहायता से आधुनिक प्रणाली का ज्ञान अच्छी तरह से कराया जा सके इसके लिए हमने पाठ्यक्रम तैयार किए हैं और कुछ नए पाठ्यक्रमों की तैयारी में जूटे हैं। इस कार्य को संपन्न करने हेतु हमने भारत सरकार का सहयोग भी माँगा है क्योंकि हम नीदरलैंड के घर-घर में हिंदी पहुँचाना चाहते हैं।

सम्मान / पुरस्कार – हमारी हिंदी परिषद को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। सितंबर 2013 में हिंदी दिवस पर भारतीय राजदूतावास की तरफ से वहाँ के अध्यक्ष ने हिंदी परिषद को सबसे अच्छी हिंदी संस्था के रूप में सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त 2011 में Hindu Council Netherland जो राज्य सरकार द्वारा स्थापित किया गया है ने हिंदी परिषद को सम्मान दिया।

अंतिम में आप सब के लिए एक छोटी सी कविता

हिंदी भाषा ज्ञान का सागर,
जिसमें हमको तैरना है,
वायदा किया जो पूर्वजों से,
उसको पूरा करना है।
हिंदी भाषा अमर रहे!

अध्यक्ष, हिंदी परिषद नीदरलैंड
त्रुद मेर्टेस्लान 10
2545 ए.एम.
देन हाग
नीदरलैंड
nsmathura@gmail.com